बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के 15वें स्थापना दिवस समारोह–2024 के अवसर पर किसानों के सफलता की कहानी के अवयव

कृषक का नाम: श्री सुबोध कुमार सिंह,
ग्राम : कुजापी
प्रखण्ड : गया सदर
जिला : गया
मो0 : 9835260601

1. प्रारंभिक परिस्थिति (Initial Situation) :

गया जिले के खरखुरा मुहल्ले के निवासी श्री सुबोध कुमार सिंह ने बी0ए0, एल0 एल0 बी0 पास होने के बावजूद सरकारी रेलवे की नौकरी को छोड़ अपनी एक अलग पहचान बनाने के उद्देश्य से पशुपालन व्यवसाय को चुना। श्री सिंह को इस बात का कोई पछतावा नहीं है कि उन्होंने सरकारी क्षेत्र में नौकरी के सुरक्षित अवसर को छोड़कर डेयरी फार्मिंग को आजीविका के रूप में अपनाया। जीवन के इस मोड़ पर उन्होंने खुद को डेयरी व्यवसाय में मजबूती से स्थापित किया और पीछे मुड़कर देखने के लिए कुछ नहीं है।

1998 में उन्होंने तीन गायों के साथ डेयरी फार्मिंग शुरू की। वास्तव में, सिंह को डेयरी फार्मिंग का कोई पिछला अनुभव नहीं था, सिवाय इसके कि उनका परिवार के सदस्यों की दूध की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कुछ गायों को पालता था।

2. चुनौती (Challenge) :

- तकनीकी एवं व्यावसायिक ज्ञान की कमी,
- आर्थिक रूप से मजबूत नहीं होना,
- बाजार में प्रतिस्पर्धा होने से अपने आप को स्थापित करने में परेशानी,
- संतुलित एवं गुणवत्तापूर्ण आहार का अभाव
- उन्नत कृत्रिम गर्भाधान करने वाले का अभाव
- कुशल श्रमिकों की कमी

3. संभावित विकल्प (Solution) :

- उन्होंने अपने परिवार की तीन गायों के साथ डेयरी प्रोजेक्ट शुरू किया।
- कृषि विज्ञान केंद्र (KVK), मानपुर द्वारा सिंह को प्रदान किए गए डेयरी फार्मिंग में प्रशिक्षण के अवसर ने डेयरी फार्मिंग को आजीविका व्यवसाय के रूप में शुरू करने के उनके निर्णय में मुख्य रूप से योगदान दिया। के.वी.के. से प्रशिक्षण उपरांत डेयरी व्यवसाय शुरू करने के बारे में दृढ़ता से निर्णय लिया। के.वी.के. ने उन्हें उद्यम शुरू करने में आवश्यक तकनीकी और वैज्ञानिक सहायता भी प्रदान की।
- राज्य सरकार से उन्हें 20 गायों के लिए लगभग 14 लाख रुपये का ऋण (लोन) प्राप्त हुआ एवं आर्थिक अभाव में कमी हुई।

- इनकी डेयरी में पशुओं को शुद्ध एवं गुणवत्ता युक्त दाना उपलब्ध कराने हेतु चक्की भी लगा है जिससे मकई का दर्रा, चना, मुंग, मसूर तथा अरहर जैसे अनाजों को पीस कर उसका मिश्रण स्वयं तैयार कर सकें।
- अपने फार्म में सफाई की विशेष व्यवस्था रखते हैं जिससे पशुओं में बिमारियाँ होने की संभावना कम से कम हो इसके लिए प्रतिदिन सुबह–शाम फिनाईल से धुलवाते हैं तथा सप्ताह में एक बार मालाथियोन बुटोक्स एवं कोर्थोलिन टी0 एच0 का छिड़काव किया जाता है। श्री सुबोध अपने पशुओं के नियमित टीकाकरण के प्रति भी सचेत रहते हैं।
- पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान की व्यवस्था स्वयं के फार्म में उपलब्ध है।
- दूध एवं पनीर की आपूर्ति–खाने की दुकानों, होटलों और रेस्तरां में करते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि गुणवत्ता और आवश्यक तापमान को बनाए रखते हुए दूध को सुरक्षित रूप से ग्राहकों तक पहुँचाया जा सके, वह मोटी गेज धातु से बने कंटेनर का उपयोग करता है।
- श्रमिकों को स्वयं एवं के.वी.के. के प्रशिक्षण के मदद से कुशल बनाया।

4. कार्य योजना (Activities) :

तीन गायों से शुरुआत करने के बाद ऋण प्राप्त कर उन्होंने 20 और गायें खरीदीं। सिंह ने अपनी लाभ कमाई को जारी रखते हुए गायों और भैंसों की संख्या में वृद्धि की और डेयरी फार्म के वैज्ञानिक प्रबंधन के लिए आवश्यक मशीनों और उपकरणों की खरीद भी की।

मवेशियों में एचएफ क्रॉस, जर्सी क्रॉस, साहीवाल और रेड सीधी नस्लें शामिल हैं। अपनी कम उत्पादक गायों को उन्नत करने के लिए उनके पास एचएफ नस्ल का एक प्रजनन सांड भी है। सिंह के डेयरी फार्म में कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा और जरूरत पड़ने पर मवेशियों को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने की सुविधा है।

अपने मवेशी स्टॉक की वंशावली को बनाए रखना उनके लिए उपयोगी साबित हुई है। डेयरी गतिविधियों के समुचित प्रबंधन के लिए उन्होंने अपनी डेयरी में सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं।

डेयरी फार्म में सेंट्रल मिल्किंग, चिलर मशीन और फॉगिंग मशीन रखे हैं। फार्म में मवेशियों के स्टॉक के लिए संतुलित चारा तैयार करने में मशीनों के उपयोग से उन्हें दूध की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिली है और इससे उनकी लाभप्रदता में वृद्धि हुई है।

5. परिणाम (Results) :

वर्तमान में 100 गायें एवं 25 भैसों से प्रतिदिन औसतन 800–900 लीटर दूध का उत्पादन होता है। डेयरी में उत्पादित कुल दूध में से लगभग 250 लीटर उनकी डेयरी से आठ किलोमीटर के दायरे में स्थित गया शहर के 150 घरों में घर–घर जाकर आपूर्ति किया जाता है। बचा हुआ दूध बड़ी मात्रा में फूड आउटलेट्स, होटलों और रेस्टोरेंट्स को सप्लाई किया जाता है। अपनी डेयरी में लगभग 30 किलोग्राम पनीर का उत्पादन भी करते हैं।

कुल 14 लोगों को डेयरी कार्य एवं दूध आपूर्ति के लिए स्थायी एवं अंशकालीन रोजगार उपलब्ध कराया है। औसतन डेयरी व्यवसाय से प्रति वर्ष ₹70 लाख का सकल शुद्ध आय प्राप्त करते हैं। भविष्य में मिल्क चिलिंग प्लांट स्थापित करने के अलावा अपनी डेयरी के ब्रांड नाम के साथ दुग्ध उत्पाद लॉन्च करने के लिए तत्पर हैं।

डेयरी फार्मिंग के क्षेत्र में उनके समर्पण और कड़ी मेहनत के लिए 2011 में राष्ट्रीय डेयरी पुरस्कार मिला। उनकी मेहनत को बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) ने भी सराहा है। बी.ए.यू., सबौर (भागलपुर) में आयोजित किसान मेले में पूर्व में सर्वश्रेष्ठ किसान का पुरस्कार दिया गया।

6. उत्प्रेरक संस्था (Facilitating Organization) :

I. कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
II. बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू), सबौर, भागलपुर
III. बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना
IV. पशु और मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार, पटना

7. फोटाग्राफ्स (Action Photographs of Activity) :